प्रकाशन २१

हिन्दी शिक्षक निर्देशिका

(कक्षा १ से ५)



राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश

वाराणसी

१९७७



भूमिका

छोटे बच्चों को अक्षरों और अंकों का बोध पहली ही बार कराते समय हम दो प्रकार की भूलें बहुधा करते हैं :—

एक, यह कि हम पाँच या छः वर्ष के बालक की क्षमताओं, सहज प्रवृत्तियों और प्रेरणाओं को ठीक-ठीक न समझने के कारण जितनी होती हैं उनसे कम मान बैठते हैं। सच यह है कि उसके विकास की गति इस समय इतनी तीव्र होती है जितनी सारे जीवन भर नहीं होती। उसके जानने और समझने की शक्ति, उसकी जिज्ञासा और अपने विचारों के परिवेश को जानकर उससे जूझने की कामना बड़ी ही उत्कट होती है। उसका शब्द-बोध हमारे अनुमान से अधिक होता है, और उसके विकास का स्तर बहुत ऊपर। इस सबकी तुलना में उसके अक्षर-बोध एवं भाषा-बोध के लिए हमारा प्रयत्न बहुत छूछा और नीरस हो जाता है।

दो, माना कि बालक पढ़ना सीखने से पूर्व अपने घर से विशाल बोध-निधि लाता है, फिर भी यह सच है कि हम जिन प्रक्रियाओं को अत्यन्त सरल समझते हैं वे उसकी समझ से बाहर हो सकती हैं, जैसे हम अपनी प्रौढ़ बुद्धि से जानते हैं कि "आ" और "म" अक्षरों के मिलने से "आम" शब्द बनता है, और "आज" शब्द में दो अक्षर सम्मिलित हैं, आ और ज। बालक में भी यही संश्लेषण-विश्लेषण शक्ति अभी विकसित है या नहीं, हम नहीं कह सकते। अथवा, हमारे विचार से १ + १ = २, अर्थात् एक में एक जोड़ देने से दो बनता है, बहुत ही मामूली बात है। किन्तु सच पूछा जाये तो इस प्रक्रिया में हमारे मस्तिष्क की ऊँची से ऊँची सर्जनात्मक प्रतिभा काम करती है। यहाँ २ का उदय सृजन है, नूतन का अविर्भाव, जो १, ±, १, इन तीनों तत्वों में से किसी एक में मौजूद नहीं है। "पूर्व" में "अपूर्व" का उदय ही तो सृजन है। हमारी शिक्षा-विधा में सृजन पक्ष दुर्बल है।

इन दोनों भूलों के कारण हम जो भी पाठ्यक्रम इनके लिये बनाते हैं और पाठ्य पुस्तक तैयार करते हैं, वह केवल परम्परा, अन्दाजा या फिर "अधिकार-सम्पन्न" पुरुषों के सपाट कथनों की मौन-स्वीकृति पर ही आधारित होते हैं। कम से कम, हिन्दी में बालक की शिक्षा के लिये psycho-linguistics अथवा विकास की दृष्टि से किसी अध्ययन का आधार नहीं मिल रहा है, और आज तक भी वही स्थिति है।

पाठ्य पुस्तक तैयार करने में कुछ आधार स्वीकार किये जा सकते हैं :—

(क) बालक के मन में उपलब्ध वाक्यों और बौद्धिक सहज गठनों का अध्ययन (innate mental structures and grammatical systems)

(ख) उसके परिवेश, शब्द-निधि और भाषा-बोध का अध्ययन जो उसके पास पढ़ना सीखने से पूर्व प्राप्त है।

(ग) पढ़ना सीखने से पूर्व के अभ्यास और तैयारियाँ : भाषा और शब्दों का बालक द्वारा प्रयोग, कहानियां सुनना और कहना, वास्तविक स्थितियों और चित्रों का वर्णन, हाथों से भाँति-भाँति की रेखाएं खींचने का अभ्यास, छोटे-छोटे गीत गाना, रेखाओं और गायन में सुधार लाकर सौन्दर्य-बोध को जगाना। "एक्शन" गीतों के द्वारा शब्द-संगीत का अनुभव पैदा करना, इत्यादि।

(घ) इस तैयारी के पश्चात् बच्चे की सर्जनात्मक शक्तियों को जगाकर शब्द-बोध, अक्षर-बोध और भाषा-बोध के लिए प्रेरित करना। इससे यहाँ इतना ही समझना चाहिए कि बालक सीखने में सक्रिय रूप से भाग ले। अध्यापक उस पर अपनी ओर से कुछ न लादे, हाँ, यथा सम्भव। होता यह है कि अध्यापक सिखाने की जल्दी में बालक को स्वयं सीखने के लिए अवसर नहीं देता। परिणामतः बालक में सीखने के लिए सर्जनात्मक प्रयत्नों का कुण्ठित होना।

(ङ) पढ़ना सीखना एक कौशल है जिसे कौशल के ही रूप में सिखाया जाना चाहिये। वर्णमाला का ज्ञान, पहिचान, शब्दों में अक्षर की स्थिति, वाक्य का सहज गठन, भाषा का प्रयोग—ये सब इस कौशल को सीखने के लिए अनेक सोपान हैं। छलाँग लगाने से बात बिगड़ सकती है।

कुशल अध्यापन का अर्थ है कि अध्यापक स्वयं कम से कम सिखाये जिससे छात्र अधिक से अधिक स्वयं सीखें। किन्तु अध्यापक स्वयं कम से कम सिखाये, इसके लिये उसे अधिक से अधिक तैयारी, कौशल एवं जागरूकता अपेक्षित है। प्रभावी अध्यापन की यही विडम्बना है।

पुस्तक की तैयारी में हिन्दी संस्थान, वाराणसी के निदेशक और प्राध्यापकों एवं अनेक मनीषी सदस्यों ने योगदान किया है, वे साधुवाद और धन्यवाद के पात्र हैं।

डा० हरद्वारी लाल शर्मा
संयुक्त शिक्षा निदेशक (प्रशि०)
शिक्षा निदेशालय, उत्तर प्रदेश,
इलाहाबाद

दो शब्द

संस्थान में विगत वर्षों के अनुभव से ज्ञात हुआ कि शिक्षकों के पास कोई ऐसी सामग्री नहीं पहुँचती, जो उनके कार्य में सहायक हो। यहाँ प्रशिक्षण में आने वाले शिक्षकों ने भी इस बात पर बल दिया कि संस्थान द्वारा कुछ ऐसी पुस्तिकाएं तैयार की जायं जिनमें सूत्र रूप से भाषा-शिक्षण को समुन्नत करने की विधियां हों। वर्तमान जीवन में किसी को मोटी-मोटी पुस्तकों के पढ़ने का न तो अवसर है और न पुस्तकें ही उपलब्ध हो पाती हैं। संयोग से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित पाठ्यपुस्तक रचना की दो समितियों—दिल्ली और कलकत्ता–में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परिषद की विचारधारा है कि शिक्षकों के लिए निर्देशिकाएं तैयार की जायं और वह स्वयं इस दिशा में सक्रिय है। इससे हमें बल मिला और हमने इस दिशा में कार्य करने का प्रयास आरंभ किया। इस विचारधारा के प्रति हमें आदरणीय शिक्षा निदेशक तथा संयुक्त शिक्षा निदेशक (प्रशिक्षण) की सहमति भी प्राप्त हुई। हमने कक्षा १ से ५, ६ से ८ तथा ९–१० के लिए निर्देशिकाएं बनाने का कार्य आरंभ किया है। इस क्रम में प्रकाशन सं० १४ के अन्तर्गत पहले ही कक्षा ६ से ८ के लिए हिन्दी शिक्षक निर्देशिका प्रकाशित हो चुकी है। श्री रामभरोसे, सहायक निदेशक के प्रयास से तैयार की गयी यह निर्देशिका (कक्षा १ से ५) आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि अन्य प्रदेशों में भी शिक्षकों के लिए निर्देशिकाएं तैयार करने की बातें सोची जा रही हैं। मध्य-प्रदेश ने जिज्ञासा भी की थी। हमें यह कहने में संकोच नहीं हो रहा है कि उत्तर प्रदेश का शिक्षा विभाग सदैव अग्रणी रहा है। इसी परम्परा में हमारा यह प्रयास है। आपके सुझावों को पाकर हम अत्यन्त अनुगृहीत होंगे।

गुरुदेव प्रसाद वर्मा
निदेशक

प्रस्तावना

शिक्षा का प्रसार भाषा के विकास पर निर्भर है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। इसके माध्यम से ही सभी विषयों का ज्ञान कराया जाता है। बालक की भाषा जितनी ही समर्थ होगी, भावों और विचारों की अभिव्यक्ति उतनी ही परिपक्व होगी। बालक सर्वप्रथम अपने माता-पिता और परिजनों से भाषा सीखता है। इसके बाद वह प्राथमिक विद्यालय में आता है। वास्तव में यहीं से उसकी भाषा की नीवँ सुदृढ़ और विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इसलिए इस स्तर पर भाषा सिखाने के लिए कुशल शिक्षक की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षक को भाषा एवं भाषा-शिक्षण-विधियों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु संस्थान में हिन्दी शिक्षकों-विशेष रूप से प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षणों और संगोष्ठियों में बुलाया जाता है। उनकी कठिनाइयों से हमें परिचित होने का अवसर प्राप्त होता रहता है। उनकी यह समस्या सदैव सामने आती रही है कि उनके विद्यालयों में कोई ऐसी निर्देशिका उपलब्ध नहीं है, जिसकी सहायता से भाषा को सफलतापूर्वक पढ़ाया जा सके।

इस निर्देशिका के लेखन और सम्पादन में हमें प्रमुख रूप से—कक्षा १ से ५ तक की हिन्दी पाठ्यपुस्तक, निर्देश पुस्तिका, बेसिक स्कूलों का अनुबंधित पाठ्यक्रम और निर्देशिका कक्षा १ से ५ (शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश), सामाजिक विज्ञान एवं मानवकी विभागराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नयी दिल्ली के कतिपय प्रकाशनों से सहायता मिली है। तदर्थ हम आभारी हैं।

कृपया इन भूलों को सुधार लें—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१७	आवश्यकत	आवश्यकता	१०	२	लकर	लेकर
१	२६	भली भति	भलीभाँति	१०	१०	लोभ	लोम
२	२७	जाय	जायं	१६	४	घालकर	घोलकर
७	१०	भ	भी	१६	२३	च	र्च
८	८	खाये	खोये	२२	२१	पष्प	पुष्प
९	२	जाय	जायं	२७	१	कराया	करायी
९	११	वणमाला	वर्णमाला	२७	१४	जा	जो
९	१८	ज्ञन	ज्ञान	३०	५	३	४

रामभरोसे
सहायक निदेशक

हिन्दी शिक्षक निर्देशिका
(कक्षा १ से ५)

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। उसका संवर्धन और उन्नयन आवश्यक है। राष्ट्र को समृद्धिशाली बनाने के लिए भाषा का उत्थान एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ के अनुसार हिन्दी को सम्पर्क-भाषा के रूप में स्थान प्राप्त हो चुका है। प्रदेश की मातृभाषा हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन शैक्षिक उन्नयन की दृष्टि से अत्यावश्यक है। भारतेन्दुजी की उक्ति है—

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।"

'निज भाषा' अर्थात् हिन्दी का उन्नयन केवल शिक्षा के लिए ही नहीं वरन् राष्ट्र की उन्नति के लिए नितान्त महत्त्वपूर्ण है। उत्तर प्रदेश की मातृभाषा भी हिन्दी ही है। इस मातृभाषा का समुचित विकास प्राथमिक स्तर से ही छात्रों द्वारा भाषा के शुद्ध प्रयोग पर निर्भर है। छात्रों के भाषा-ज्ञान को बढ़ाने की दिशा में शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। मातृभाषा की समुचित शिक्षा पर ही बालक का सम्पूर्ण भविष्य निर्भर करता है। बालक की भाषा जितनी ही समर्थ होगी उसके भावों और विचारों की अभिव्यक्ति भी उतनी ही प्रभावपूर्ण होगी। इसलिए भाषा शिक्षण पर विशेष बल देने की आवश्यकत है।

मातृभाषा समाज से प्रभावित होती है। पहले बालक माता-पिता तथा समाज के अन्य सदस्यों से ही भाषा सीखता है, तत्पश्चात् वह प्राथमिक विद्यालयों में पहुँचता है। वास्तव में यहीं से बच्चे की भाषा की नीवँ मजबूत होती है। इसलिए प्राथमिक विद्यालयों का मातृ-भाषा के विकास में महत्त्वपूण स्थान है।

मातृभाषा अन्य विषयों की भाँति एक विषय मात्र नहीं है। भाषा वह नीवँ है जिस पर विद्यालयी शिक्षा आधृत है। सभी विषय मातृभाषा के माध्यम से ही पढ़ाये जाते हैं। सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान सरलता से तभी कराया जा सकता है जब बालक को मातृभाषा का भलीभ ति

ज्ञान हो। अतएव मातृभाषा के शिक्षण को प्रभावशाली एवं प्रौढ़ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि प्रारम्भिक विद्यालयों के भाषा-अध्यापकों को पाठ्यक्रम की पूर्ण जानकारी हो। शिक्षण के लिए सबसे पहले पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम से ही यह ज्ञात होता है कि बालक को विषय का ज्ञान किस स्तर पर कितना कराना चाहिए। इसलिए प्राथमिक विद्यालयों की दृष्टि से कक्षावार हिन्दी पाठ्यक्रम के साथ-साथ शिक्षण को प्रभावशाली एवं रोचक बनाने के उद्देश्य से हिन्दी शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव विन्दु क्रम से प्रस्तुत किये जा रहे हैं :—

कक्षा १

पाठ्यक्रम :

१—मौखिक भाव प्रकाशन-- मौखिक भाव प्रकाशन का ध्येय यह होना चाहिए कि बच्चे बिना झिझक के अपनी बात को स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण ढंग से कह सकें। नीचे दिये हुए प्रकरणों के आधार पर मौखिक कार्य होना चाहिए।

(क) **वार्तालाप** :- १—घर और पास-पड़ोस से सम्बन्धित—अपना घर, पालतू जानवर और पक्षी, खेल-खिलौने, पनघट, तालाब इत्यादि।

२—प्राकृतिक वातावरण से सम्बन्धित—सूरज का निकलना और डूबना, पानी बरसना, इन्द्र-धनुष, नदी, पहाड़, झरना इत्यादि।

३—पाठशाला से सम्बन्धित—खेती, बागवानी तथा शिल्प सम्बन्धी कार्य, बाल-सभा, बालचर, स्कूल के उत्सव, पन्द्रह अगस्त, गांधी जयंती इत्यादि।

४—सामाजिक जीवन सम्बन्धी—हमारे लिए काम आने वाले लोग जैसे किसान, बढ़ई, लोहार, धोबी इत्यादि। त्योहार, उत्सव, मनोरंजन के साधन—जैसे खेल, तमाशे इत्यादि।

ध्यातव्य बातें—वार्तालाप के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाय —

१. बालकों के बोलने की झिझक दूर की जाय।

२. वार्तालाप के विषय उनकी रुचि के अनुसार लिये जायँ।

३. प्रश्न सरल और छोटे हों।

४. बच्चों को वार्तालाप का अधिकाधिक अवसर दिया जाय ।
५. बच्चों के प्रति अध्यापक का व्यवहार मृदु एवं सहानुभूति पूर्ण हो ।
६. अशुद्धियों के लिए उन्हें हतोत्साहित न किया जाय ।
७. उत्तर पूरे वाक्य में लिया जाय ।
८. उनकी भाषा के सुधार पर क्रमशः ध्यान दिया जाय ।
९. स्थानीय बोली के प्रभाव को धीरे-धीरे कम किया जाय ।
१०. वार्तालाप का अवसर प्रत्येक बच्चे को दिया जाय ।

वार्तालाप के विषय :—पास-पड़ोस, प्राकृतिक वातावरण, पाठशाला, सामाजिक जीवन आदि से चुने जायं । नीचे कतिपय उदाहरण दिये जा रहे हैं—

पास-पड़ोस

महमूद—तुम कल पढ़ने क्यों नहीं आये ?
मोहन—मित्र ! मेरे पिताजी कल लखनऊ गये थे ।
महमूद—वे तुम्हारे लिए क्या-क्या लाये ?
मोहन—पिताजी मेरे लिए मोर, घोड़े, हवाई जहाज आदि बहुत से खिलौने लाये । वे लखनऊ की रेवड़ी भी लाये । मित्र ! कल तुम मेरे घर आना, मैं तुमको रेवड़ी खिलाऊँगा ।

प्राकृतिक वातावरण

अध्यापक—तुम कहाँ रहते हो ?
शिष्य—महोदय ! मैं शिवपुर में रहता हूँ ।
अध्यापक—शिवपुर यहाँ से किस ओर है ?
शिष्य—मुझे यह मालूम नहीं है ।
अध्यापक—शिवपुर पश्चिम की ओर है ।
शिष्य—गुरुजी ! कैसे ?
अध्यापक—देखो, सूरज जिधर निकलता है उधर की ओर मुँह करके खड़े हो जाओ । सामने की ओर पूर्व, पीठ की ओर पश्चिम, दायें हाथ की ओर दक्षिण और बायें हाथ की ओर उत्तर होगा ।

पाठशाला

दीपक—बहिन ! स्कूल में आज बहुत सफाई हो रही है। झंडियाँ लगायी जा रही हैं। यह सब क्यों हो रहा है ?

मंजु—अरे ! १५ तारीख आनेवाली है।

दीपक—१५ तारीख को क्या है ?

मंजु—तुम्हें नहीं मालूम ?

दीपक—नहीं।

मंजु—१५ अगस्त को आजादी मिली थी। उसी की याद में इस दिन हम सब खुशी मनाते हैं।

दीपक—इस दिन स्कूल में क्या होगा ?

मंजु—सुबह प्रभातफेरी निकलेगी, फिर झंडा फहराया जायगा। उसके बाद सभी बच्चों को मिठाई मिलेगी।

सामाजिक जीवन

दिनेश—आज तो खूब पानी बरस गया।

सुरेश—किसानों के लिए सोना बरस गया।

दिनेश—कैसे ?

सुरेश—लोग खेतों में हल चलायेंगे और फसल बोयेंगे।

दिनेश—हल क्या होता है ?

सुरेश—इससे खेत जोता जाता है।

दिनेश—हल किस चीज से बनता है ?

सुरेश—हल लकड़ी और लोहे से बनता है।

दिनेश—इसको कौन बनाता है ?

सुरेश—बढ़ई और लोहार।

दिनेश—तो ये लोग किसान की बड़ी सहायता करते हैं !

सुरेश—क्यों नहीं।

दिनेश—क्या और लोग भी किसान की सहायता करते हैं ?

सुरेश—मोची, कुम्हार, नाई, धोबी सभी किसान की मदद करते हैं।

(ख) **चित्रों द्वारा मौखिक कार्य** :—१—चित्रों पर प्रश्नोत्तर २—चित्रों का वर्णन ३—चित्रों के आधार पर कहानी रचना।

चित्रों के प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ ध्यातव्य बातें :—

१. चित्र, स्पष्ट, रंगीन, आकार में बड़े तथा आकर्षक हों।
२. चित्र दिखाकर बच्चों से प्रश्न किया जाय और पूरे वाक्य में उत्तर लिया जाय।
३. अभ्यास हो जाने पर छात्रों को स्वतन्त्र रूप से भी चित्र-वर्णन का अवसर दिया जाय।
४. बच्चों के कथन तथा उनकी भाषा में यथावसर सुधार किया जाय।
५. किसी कहानी से सम्बन्धित दो-तीन चित्र दिखाकर बच्चों से उसका क्रम निश्चित कराया जाय।
६. कुछ नये चित्र या दृश्य दिखाकर कहानी-रचना के लिए प्रेरित किया जाय।

(ग) **कहानी कहना और सुनी हुई कहानियों को दोहराना :—** जानवरों की कहानियाँ, जनसाधारण में प्रचलित कहानियाँ, लोक कथाएँ, पौराणिक कहानियाँ, परियों की कहानियाँ, जिनमें भयानक दृश्य न हों—सुनायी जायं और सुनी जायं।

कुछ विचारणीय बिन्दु :—

१. कहानियों का संग्रह शिक्षक स्वयं बाल पत्रिकाओं—नन्दन, पराग, चम्पक, बाल मनोहर कहानियाँ, जीवन-शिक्षा आदि—से करें।
२. विद्यालय में उपलब्ध बालोपयोगी पुस्तकों से भी कहानियों का चयन करें।
३. कहानियाँ छोटी एवं मनोरंजक हों।
४. कहानियाँ सरल भाषा में स्वाभाविकता के साथ सुनायी जायं।
५. कहानी कहते समय उससे सम्बन्धित चित्रों का प्रयोग किया जाय।
६. चित्रों के अनुसार कहानी दो या तीन सोपानों में सुनायी जाय।
७. सोपान के अन्त में बालकों से उसकी पुनरावृत्ति करायी जाय।
८. कहानी में प्रयुक्त नये शब्द या वार्तालाप के कुछ वाक्य आवृत्ति द्वारा याद करा दिये जायं।
९. कहानी कहने में भावानुकूलता एवं प्रभावोत्पादकता पर विशेष बल दिया जाय।

१०. कहानी सुनाते समय उचित गति एवं सूक्ष्म अभिनय पर भी ध्यान दिया जाय।

(घ) **कविता याद कराना** :—सरल कविताओं को याद करवायें तथा शुद्ध उच्चारण और प्रभावपूर्ण ढंग से कविता का सुपाठ करायें।

अध्यापकों को चाहिए कि वे सरल तथा छोटी-छोटी कविताओं का संकलन करें और बालकों से याद करवायें। विशेष अवसरों पर उनका सुपाठ करवाया जाय और बालकों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें पुरस्कृत भी किया जाय। यदि पुरस्कार में किसी वस्तु की व्यवस्था न की जा सके तो बाल-सभा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले छात्रों के नाम की घोषणा करके भी प्रोत्साहित किया जा सकता है। स्वर, लय और आरोह-अवरोह के साथ बच्चों को सामूहिक कवितापाठ करने का भी अवसर दिया जाय। पाठ्य-पुस्तक की रुचिकर कविताएँ बालकों को याद करायी जायं।

(१) यह देखो यह मेरो गुड़िया,
अम्मा तुमने देखी गुड़िया ?
मैं झूले में इसे झुलाती,
थपकी देकर इसे सुलाती।
मैं भी इसके संग सो जाती,
चन्दा मामा तक हो आती।
संग में जाती मेरी गुड़िया,
यह देखो यह मेरी गुड़िया।

इसके अतिरिक्त बालकों की रुचि को देखते हुए विविध क्रिया-कलापों, महापुरुषों, उत्सवों से सम्बन्धित कविताएँ भी याद करायी जायं, जैसे :—

(२) पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ, हरे-भरे तुम पेड़ लगाओ।
साफ हवा तुम इनसे पाओ, पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ।
पेड़ लगाओ, छाया पाओ, छाया में तुम खेलो खाओ।
पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ, इनसे तुम मीठे फल खाओ।
जब वे पेड़ सूख जायेंगे, इनसे हम लकड़ी पायेंगे।
इसीलिए सब पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ।

(३) आओ आओ कृष्ण कन्हैया, आओ दाऊ जी के भैया।
गाय चराने वाले आओ, बंशी हमें सुनाने आओ।
माखन खूब खिलाने आओ, हम सब लेते आज बलैया,
आओ आओ कृष्ण कन्हैया।

(४) बढ़े चलो बढ़े चलो, बहादुरों, बढ़े चलो।
रुको नहीं, अड़ो नहीं, बहादुरों बढ़े चलो।
डरो नहीं, झुको नहीं, बहादुरों बढ़े चलो।

(५) बापू - बापू प्यारे बापू, तुम थे जग से न्यारे बापू।
अंगरेजों को दूर भगाया, दासों को इंसान बनाया।
'सच बोलो', यह सदा बताया, 'कष्ट न दो', यह भ सिखलाया।
बापू - बापू, प्यारे बापू, तुम हम सब के प्यारे बापू।

(६) काली रात हुई उजियाली, घर-घर है आयी दीवाली।
भर-भर दिये जलायेंगे हम, खीर मिठाई खायेंगे हम।
नये खिलौने लायेंगे हम, गीत खुशी के गायेंगे हम।
घर घर है आई दीवाली, काली रात हुई उजियाली।

(७) आओ आओ, कोयल रानी, डाल-डाल पर उड़-उड़कर।
छिपना मत ऊँचे चढ़कर, मुझे सुनाओ कोमल बानी।
आओ-आओ कोयल रानी।

बौरे आम हवा मतवाली, नाच रही है डाली डाली।
तुम छिपती क्यों कोयल रानी, बिना तुम्हारे है हैरानी।
आओ-आओ कोयल रानी।

(८) होली आयी, होली।
मोहन आये, सोहन आये, रंग भरी पिचकारी लाये।
पीली टोपी लाल अँगरखा, रँगी रंग में होली।
भर पिचकारी रंग बरसाती, झूम-झूमकर घूम-घूमकर।
शोर मचाती होली गाती, होली आयी होली।
माँ मुझको पिचकारी ला दो, दो पैसे का रंग मँगा दो।
मैं भी जाकर होली खेलूँ, लेकर रंग की झोली।
होली आयी, होली।

पढ़ना

१—परिचित वस्तुओं के चित्रों की सहायता से सरल शब्दों का पढ़ना।

२—परिचित प्रतीकों और ध्वनि साम्य के आधार पर बनी हुई शब्द-शृंखलाएँ पढ़ना।

३—परिचित शब्दों की सहायता से सरल वाक्य पढ़ना।

४—अक्षरों और मात्राओं का ज्ञान। ऋ, ण, क्ष, ज्ञ का ज्ञान तथा र पर 'उ' की मात्रा लगाना वर्ष के अन्तिम भाग में सिखाया जाय।

५—खाये हुए अक्षरों और मात्राओं की सहायता से बने हुए शब्दों और वाक्यों को पढ़ना।

ध्यातव्य बातें :

१—अध्यापक सर्वप्रथम चित्रों की सहायता से बालकों को परिचित वस्तुओं के नाम के शब्दों का बोध कराएँ, जैसे—आम, अमरूद, छाता, हाथी, घोड़ा, सीटी, रेल आदि। वस्तुओं के चित्र बड़े एवं स्पष्ट होने चाहिए जिससे उन्हें पूरी कक्षा भली प्रकार देख सके।

२—अक्षरों और मात्राओं का ज्ञान हो जाने के बाद ऋ, ड़, ढ़, ण, क्ष, ज्ञ का ज्ञान कराया जाय। यह कार्य प्रथम छमाही के अन्त में समाप्त हो जाना चाहिए।

३—इसके पश्चात् कुछ ऐसे शब्द पढ़ाये जायं जो वाक्य बनाने के लिए आवश्यक हों जैसे—वह, यह, जब, तब, कब, ये, वे, जहाँ, वहाँ, है, हैं, ने, में, आ, खा, सो, पी, जा आदि।

४—इस स्तर पर बालकों को दो तथा तीन अक्षरों से बने हुए सरल शब्दों को पढ़ाया जाय, जिनमें कई मात्राओं का प्रयोग हो जैसे—तितली, चिड़िया, गुड़िया, डलिया, नानी, पानी, मीरा, झूला, किताब, हिसाब आदि।

५—इसके बाद बालकों को सरल संयुक्ताक्षरों का परिचय कराया जाय। जैसे—कुत्ता, सस्ता, प्याला, प्यारा, तुम्हारा, बिल्ली, पत्र, मित्र आदि।

मात्राओं का ज्ञान और अभ्यास कराने के लिए समान ध्वनि की शब्द-शृंखलाओं को पढ़वाया जाय जैसे भालू, आलू, कालू, झूला, लूला, फूला, रेल, खेल, जेल, केला, मेला, ठेला आदि।

पढ़े हुए शब्दों के ज्ञान के आधार पर बालकों से सचित्र पाठ पढ़ाये जायं। इससे बालकों को पूरे वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास होगा और वे परिचित शब्दों को भी दोहरा सकेंगे। इस स्तर पर पाँच-छः शब्दों से बने हुए सरल वाक्यों को पढ़ना बालकों को अवश्य आ जाय।

उदाहरणार्थ :—

राम आ, राम घर आ, घर में माँ है।

नमस्ते।

नमस्ते प्रेम, तुम्हारे पिताजी हैं?

जी नहीं, पिताजी बाहर गये हैं।

इस विधि से पढ़ाने से बालक पूरी वर्णमाला और मात्राओं से परिचित हो जाते हैं और बड़े-बड़े वाक्यों को पढ़ने लगते हैं।

पाठ्यक्रम में दी गयी विधि के आधार पर पढ़ना सिखाना :

१—जिस शब्द को बालक न पढ़ सकें उसके भागों का पठित शब्दों के भागों से मिलान करके उनको पढ़ना सिखाया जाय, जैसे यदि बालक 'पानी', 'घर' पढ़ पाता है तो पानी और घर शब्दों से 'प' और 'र' को पहचनवाकर 'पर' पढ़ना सिखाया जाय।

२—जिन प्रतीकों और मात्राओं का बच्चों को भली प्रकार ज्ञान हो जाय उनकी सहायता से शिक्षक उनसे नये शब्द बनवायें और उन्हें श्यामपट्ट या कागज पर लिखकर बालकों से पढ़वायें जैसे खाना, पाना, बाजा पढ़ाने के बाद बच्चों से जाना, बाना, राजा, मामा आदि शब्द पढ़वाये जा सकते हैं।

३—पढ़ना सिखाने में चार्ट तथा फ्लैशकार्ड की सहायता ली जाय। शब्द समूहों को बड़े-बड़े कागजों पर मोटे अक्षरों में लिखकर चार्ट तैयार किये जायं। ये चार्ट चित्रों की सहायता से रोचक बनाये जा सकते हैं। इसी प्रकार शब्दों को दफ्ती के छोटे-छोटे आयताकार टुकड़ों पर लिखकर फ्लैशकार्ड तैयार किये जा सकते हैं।

४—दफ्ती या रेगमाल से कटे हुए अक्षरों और मात्राओं से शब्द बनाकर बच्चों से पढ़वाये जायं।

५—शब्दों को जानने के लिए बच्चों से खेल खेलाये जायं जैसे 'क' को लकर दो बच्चे बारी-बारी से ऐसे शब्द बनायें जो 'क' से शुरू होते हों जैसे—कलम, कमल, ककड़ी, कचौड़ी, कबूतर आदि। शब्द को न बता सकने वाला हारा और बताने वाला जीता माना जाय।

६—अक्षर एवं मात्राओं को दफ्ती के टुकड़ों पर लिख लिया जाय। उनको जोड़कर बच्चों के सामने शब्द बनाया जाय और उनसे पढ़वाया जाय। पुनः उन्हें अलग करके बालकों से वही शब्द बनवाये जायं। इनसे अन्य प्रकार के शब्द भी बनवाये जा सकते हैं, जैसे—(क) (ल) (म) (ा) (ो) कलम, कल, मल, कमाल, कमला, कोमल, मोल, कोल, लोभ, कलोल आदि।

७—एक गोल पट्टिका पर घड़ी की तरह बीच में एक लकड़ी की सुई लगायी जाय और उसके चक्र में समान दूरी से कई शब्द लिखे जायं तथा बच्चों को एक बार पढ़ा दिये जायं। पुनः सुई घुमाकर शब्द का नाम लेकर उसपर उनसे सुई रखने को कहा जाय। यह विधि पढ़ने के लिए उत्तम विधि है। राज्य हिन्दी संस्थान ने इसे बनाकर इसका प्रयोग किया है। बालकों को पढ़ना सिखाने में यह विधि रुचिकर व सफल सिद्ध हुई है।

८—श्यामपट्ट पर बच्चों, उनके मित्रों, सम्बन्धियों, जानवरों, औजारों आदि के नाम लिखकर शिक्षक कई बार पढ़ें और फिर उनके नाम उनसे पहचनवायें। इसी प्रकार अन्य शब्दों की पहचान करायी जाय और दफ्ती के टुकड़ों पर पाठ्यपुस्तक के कुछ चुने हुए वाक्य लिख दिये जायं। वाक्यों के शब्द क्रम से न हों। दो नमूने नीचे दिये जा रहे हैं—

यह की है   लायी वह है खाना।

शीला गुड़िया

बच्चों से शुद्ध वाक्य बनाकर पढ़ने को कहा जाय।

९—तीन प्रकार के दफ्ती के टुकड़े लिये जायं। एक प्रकार के टुकड़ों पर चित्र बने हों, दूसरे प्रकार के टुकड़ों पर उनके नाम लिखे हों और तीसरे प्रकार के टुकड़ों में उनके अक्षर अलग-अलग लिखे हों। बच्चों से पहले चित्रों के नीचे उनके नाम वाले कार्ड रखवाये जायं, उसके बाद अक्षरों को मिलाकर उनके नाम बनवाये जायं।

१०–बालक जो पाठ पढ़ चुके हों उनमें से शब्द छाँटकर अलग-अलग कार्ड पर लिख दिये जायं। बालक उन शब्दों के कार्ड को अपनी पुस्तक से ढूँढ़कर बतायें। इसी प्रकार पुस्तक के विभिन्न शब्दों के अलग कार्ड बनाकर उनको मिला दिया जाय और बालकों से पूछे गये शब्द का कार्ड निकलवाया जाय।

लिखना

१—लिखना सिखाने से पहले अक्षरों और मात्राओं से बच्चों को भली प्रकार परिचित कराया जाय।

२—श्यामपट्ट पर लिखे हुए या पुस्तक के शब्दों तथा वाक्यों का अनुलेख कराया जाय।

कतिपय ध्यातव्य बिन्दु :

१—शिक्षक गीली मिट्टी से अक्षरों के नमूने बनाकर बच्चों को दिखायें और बच्चे इसी प्रकार के अक्षर बनायें।

२—रंगीन चाक या बुरादे के द्वारा अक्षर बनवाये जायं।

३—बालू या मिट्टी पर उँगली से अक्षर बनवाये जायं।

४—गीली मिट्टी के चौकोर टुकड़ों पर अक्षर खुदवाये जायं और उनपर बच्चों से कलम या उँगली फेरवायी जाय।

५—दफ्ती के चौकोर टुकड़ों पर बने हुए अक्षरों पर हाथ फेरवाया जाय।

६—दोहरी रेखाओं से मोटे-मोटे अक्षर लिख दिये जायं, फिर उनमें बालकों से रंग भरवाया जाय। मात्राओं और मिलावट के अक्षरों में अलग-अलग रंग भरे जायं।

७—लकड़ी के एक टुकड़े से या कलम से बालू तथा मिट्टी पर अक्षरों की आकृतियां बनवायी जायं।

८—बालकों को तखती और कलम पकड़ने का ढंग बताया जाय। प्रारम्भ में शिक्षक रंगीन खड़िया से अक्षर लिख दें और बालक उन पर कलम फेरें।

९—रूई या पूनी से भी अक्षर बनवाने का अभ्यास कराया जा सकता है।

१०–शिक्षक श्यामपट्ट पर मोटे-मोटे अक्षर, शब्द या वाक्य स्पष्ट एवं सुन्दर रूप में लिख दें और बालक उसी प्रकार से अपनी तखती पर अक्षर लिखें।

११–अनुलेख एवं सुलेख लिखाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षक इस ओर विशेष दृष्टि दें :—

(क) बालक के बैठने का ढंग सही हो।

(ख) कलम नरकट की हो और उसके पकड़ने का ढंग भी सही हो।

(ग) अक्षर एवं मात्राओं की बनावट सुडौल और सुन्दर हो।

(घ) कक्षा १ में कलम का कत ६ मि० मी० हो तथा लिखने की पंक्ति के बीच की दूरी ३ से० मी० हो। वर्ण से वर्ण के बीच की दूरी एक खड़ी पाई, शब्द से शब्द के बीच की दूरी एक अक्षर तथा वाक्यों के बीच की दूरी दो वर्णी शब्द के बराबर हो।

(ङ) हाशिया छोड़ना आवश्यक है।

(च) अक्षरों का आकार ठीक हो और उनके ऊपर शिरोरेखा अवश्य खींची जाय।

कक्षा १ में अध्यापक को उपर्युक्त बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यहीं से बालक के बोलने, पढ़ने और लिखने की नीवँ पड़ती है। इस स्तर पर शिक्षक की रंचमात्र उपेक्षा से बालक पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वह वांछित योग्यता प्राप्त नहीं कर पाता है तथा उसका स्तर सदैव गिरा रह जाता है।

कक्षा २

पाठ्यक्रम

१—मौखिक भाव प्रकाशन :

(क) कहानी-कथन, वार्तालाप एवं वर्णन के रूप में दो-चार मिनट तक लगातार बोल सकना।

(ख) शिष्टाचार की भाषा का ज्ञान तथा व्यवहार—आप, जी, बहुत अच्छा, श्री, श्रीमान, श्रीमती, आइए, कीजिए आदि का प्रयोग।

(ग) अभ्यासों के विषय और प्रकरण कक्षा १ की भाँति होंगे। इस कक्षा में भी इन प्रकरणों के उन्हीं पक्षों पर काम कराया जाय, जिन पर बोलने के लिए बालक स्वयं उत्सुक रहते हैं। बोलने का अभ्यास पर्याप्त मात्रा में हो।

टिप्पणी—

१—कक्षा में बालकों द्वारा खड़ी बोली का अधिकाधिक प्रयोग हो।

२—इस स्तर पर मौखिक कार्य का उद्देश्य यह है कि बालकों को सप्रवाह बोलने का अभ्यास हो। संशोधन कार्य उतना ही हो और इस तरह से हो कि वह बच्चों के बोलने के प्रवाह में बाधक न हो। सुधार का प्रधान साधन शिक्षक का शुद्ध प्रयोग ही होगा।

(घ) कम से कम दस कविताओं को कण्ठस्थ करना और इनका सुपाठ करना।

मौखिक भाव प्रकाशन के सम्बन्ध में ध्यातव्य बातें—

१—कक्षा १ में बतायी गयी विधियों को विस्तार के साथ प्रयोग में लाया जाय।

२—बच्चों को दृश्य के अनुसार घटना का वर्णन करना सिखलाया जाय।

३—बालकों से कहानियां कहलवायी जायं।

४—बालकों को विभिन्न पात्रों के रूप में खड़ा कर वार्तालाप कराया जाय।

५—चित्रों के आधार पर कहानियां कहवायी जायं, जैसे—अंगूर की बेल ऊँचाई पर फैली हुई, एक लोमड़ी उसकी ओर कूदती हुई या एक कुत्ता, उसके मुँह में रोटी का टुकड़ा, नदी का किनारा आदि चित्र दिखाकर पूरी कहानी कहलवायी जाय।

६—बालकों से नये समाचार पूछे जायं।

घर, पास, पड़ोस, मुहल्ले में जो भी नयी बात वे देखते या सुनते हैं उनकी चर्चा कक्षा में करायी जा सकती है। जैसे एक किसान के घर में कृषि के बारे में सुनी हुई बातों को बालक से कहलाना।

नन्दू—तुम्हारे कितने भाई हैं ?
चन्दू—मेरे तीन भाई हैं।
नन्दू—वे क्या करते हैं ?
चन्दू—बड़ा भाई खेती करता है और हम दो भाई पढ़ते हैं।
नन्दू—तुम्हारे घर खेतो में कौन-सी चीजें पैदा होती हैं ?
चन्दू—गेहूँ, धान, ईख, सब्जी आदि पैदा होती हैं।
नन्दू—गेहूँ की अच्छी पैदावार के लिए कैसी मिट्टी चाहिए ?
चन्दू—दोमट और भुरभुरी मिट्टी में गेहूँ अच्छा पैदा होता है।

नन्दू—गेहूँ की उपज के लिए और किन-किन चीजों की ज़रूरत पड़ती है ?

चन्दू—सिंचाई, खाद, गोड़ाई और निराई की ज़रूरत पड़ती है ।

नन्दू—सिंचाई के कौन-कौन से साधन हैं ?

चन्दू— नहर, ट्यूबवेल, तालाब आदि सिंचाई के साधन हैं ।

नन्दू—अब हम भी पिताजी से गेहूँ की खेती कराने के लिए कहेंगे ।

पाठ्यपुस्तकों से बालकों को कम से कम पाँच कविताएं अवश्य कण्ठस्थ करा दी जायं । पाठ्यपुस्तक के बाहर की भी इस स्तर की कुछ रुचिकर कविताएं याद करने के लिए बालकों को प्रेरित किया जाय । इस कक्षा में बच्चों को कम से कम १० कविताएं अवश्य याद करा दी जायं और उनके सुपाठ का भी अभ्यास करा दिया जाय ।

कक्षा २ के छात्रों के लिए उपयोगो कुछ कविताएं नीचे दी जा रही हैं :

१— पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ ।
हरे-भरे तुम पेड़ लगाओ ।।
आम और अमरूद लगाओ ।
शीशम और बबूल लगाओ ।।
आओ बच्चों मिलकर आओ ।
पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ ।।
थाला खोदो खाद मिलाओ ।
अच्छे-अच्छे पौधे लाओ ।।
हँसी-खुशी के गाने गाओ ।
आओ बच्चो पेड़ लगाओ ।।

२— खाद बनाओ खाद बनाओ ।
आओ बच्चो खाद बनाओ ।।
घास-फूस और पत्ती लाओ ।
गोबर कूड़ा, मिट्टी लाओ ।।
मिला सभी को एक बनाओ ।
खाद बनाओ खाद बनाओ ।।
गड्ढा खोदो कूड़ा लाओ ।
गोबर का तुम घोल बनाओ ।।

गोबर से कूड़े को ढक दो।
यों कूड़े से सोना ले लो॥

खाद बनाओ खाद बनाओ।
आओ बच्चों खाद बनाओ॥

३— तकली रानी, तकली रानी, नाच रही कैसी मनमानी।
घूम-घूमकर कितना सुन्दर, नृत्य दिखाती अपना मनहर !
बड़े वेग से चलती है यह, चलने पर कब रुकती है यह।
इतना सुन्दर सूत कातकर देती रहती है जीवनभर।
अपने लिए न कुछ करती है यों ही नग्न बनी रहती है।
जनहित में रह जीवन इसका रहा अभी तक कैसा किनका।
आओ हम भी इससे सुन्दर, शिक्षा लें कातें जीवनभर।

४— जय जय भारत जय हो, तेरी सदा विजय हो।
सब देशों में तेरा मान, बढ़ी चढ़ी है तेरी शान
मोती मणियों की तू खान, सब मिल गायें एक जबान
जय जय भारत जय हो, तेरी सदा विजय हो।

सब देशों से तू है प्यारा, सब देशों से तू है न्यारा,
तुझ पर हमने तन मन वारा, सब मिल बोलें ऊँचा नारा,
जय जय भारत जय हो, तेरी सदा विजय हो।

५— हाँ हाँ चलो वसन्त मनाओ।
बैठ आम पर कोयल बोली, मगन हुई हंसों की टोली।
मानो प्रेम-सुधा-रस घोलो, घूम-घूमकर मन बहलाओ॥
हाँ हाँ चलो वसन्त मनाओ॥

हरी-भरी कलियाँ मतवाली, जिनपर उड़ती तितली काली।
सुख से देख रहा है माली, कहता है आनन्द सरसाओ॥
हाँ हाँ चलो वसन्त मनाओ॥

खूब खिले हैं बाग-बगीचे, ओढ़े हैं रंगीन गलीचे।
उड़ते भौंरे आँखें मीचे, चलो गले से गले मिलाओ॥
हाँ हाँ चलो वसन्त मनाओ॥

६— होली आयी होली आयी, नयी उमंगें संग में लायी।
गली - गली में है रंगरेली, सबने मिलकर होली खेली।
रंग - बिरंगे कितने न्यारे, पीले लाल केसरिया प्यारे।
रंग घोलकर वारी-बारी, मारेंगे भर-भर पिचकारी।
खूब उडेगा आज गुलाल, खूब मलेंगे आज गुलाल।
रंग मुखों पर लगा रसीले, बन जायेंगे रंग रँगीले।
नाच-कूदकर रास करेंगे, भाँति-भाँति के रूप धरेंगे।
"रहना सीखें सभी प्रेम से, भ्रातृ-भाव से कुशल-क्षेम से।
बोले मीठी सबसे बोलो, यही बताती हमको होली।"
होली आयी होली आयी, नयी उमंगें संग में लायी॥

(२) पढ़ना

१—(क) अक्षर और मात्राओं को अलग-अलग पहचानकर व रुक-रुककर पढ़ने के स्थान पर तीन-चार वाक्यों के छोटे-छोटे अनुच्छेद, पदों और शब्द-समूहों की अर्थान्वितियों को एक साथ मुखरित करके सप्रवाह पढ़ना।

(ख) पठन सामग्री का अर्थ-ग्रहण।

(ग) पठित अंशों तथा तत्सम्बन्धी चित्रों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना।

२—(क) उपर्युक्त पठन सामग्री द्वारा निम्नलिखित संयुक्त अक्षरों और तत्सम्बन्धी ध्वनियों का अभ्यास क्क, क्ख, क्य, क्म, क्र, क्ल, क्व, क्ष, क्ष्म, ग्ध। च्च, च्छ, ज्य, ज्ञ। ट्ट, ट्ठा। ड्डा। त्त, त्थ, त्न, त्य। द्द, द्ध, ब्द। न्त, न्द, न्द्र, न्ध, न्न, न्म, न्य, न्ह। प्प, प्य, प्र। फ्त, प्फ, फ्र। ब्ब। म्प, म्म, म्ह। र्क, र्ख, र्ग, र्च, र्त, र्थ, र्द, र्ध, र्फ, र्म, र्य, र्र, र्श, र्ष। ल्क, ल्द, ल्य, ल्ल, ल्ह। व्य। श्च, श्ल, श्य, श्म, श्र। ष्ट, ष्ण, ष्प, ष्य। स्ट, स्त, स्त्र, स्थ, स्न, स्थ, स्य, स्ल, स्स। ह्, न, ह्न।

(ख) ऋ और उसकी मात्रा; 'र' पर उ और ऊ की मात्रा एवं ज्ञ तथा क्ष के पढ़ने का अभ्यास।

टिप्पणी :—यह स्तर परिचित एवं अनुभूत विषयों की सामग्री द्वारा पढ़ना सिखाने का है। अतः पुस्तक में जहाँ कहीं अपरिचित सामग्री मिले उससे छात्रों का परिचय पठन-कार्य के पूर्व ही मौखिक कार्य द्वारा करा लिया जाय।

पठन के सम्बन्ध में कुछ ध्यातव्य बातें—

१—बालकों से सरल भाषा में सामान्य बातों पर बातचीत की जाय और उन्हीं बातों को सरल वाक्यों में लिखकर बालकों से पढ़वाया जाय।

२—चित्रों की सहायता से बालकों को कुछ शब्दों से परिचित कराया जाय जैसे, हाथी का चित्र उनके सम्मुख उपस्थित किया जाय और हाथी, ऊँट, गैंडा, शेर शब्दों की एक शृंखला उनके सामने रखी जाय तथा उनसे चित्र के लिए उपयुक्त शब्द बताने के लिए कहा जाय।

३—कुछ ऐसे शब्दों का ज्ञान कराया जाय जो वाक्य रचना के लिए आवश्यक हैं। जैसे वह, वे, क्या, क्यों, आना, जाना, करना, पढ़ना आदि।

४—सचित्र पाठों को बच्चों से पढ़वाया जाय।

५—पुस्तक में दिये गये शब्दों के अतिरिक्त भी समान ध्वनि के कुछ अन्य शब्दों को भी पढ़वाया जाय और इस तरह के दूसरे शब्द बच्चों से पूछे जायं तथा संयुक्त अक्षरों का ज्ञान भी करवाया जाय। जैसे मक्का की ध्वनि वाले शब्द पक्का, कक्का, चक्का, हुक्का आदि तथा चक्कर से सम्बन्धित शक्कर, मक्कर, टक्कर आदि शब्द पूछे जायं।

६—मात्रा का नाम और पढ़ने का ढंग भी बताया जाय।

७—भाषा सम्बन्धी खेल खेलवाये जायं जैसे अनेक प्रकार के २० शब्द श्यामपट्ट पर लिख दिये जायं। प्रत्येक बालक से अलग-अलग पढ़वाया जाय। जो बालक पहले और शुद्ध रूप में पढ़ ले, उसे जीता माना जाय। इसी प्रकार शब्द-निर्माण विधि द्वारा भी शब्द बनवाये जायं।

८—चार अथवा पाँच सरल वाक्यों से बने हुए अनुच्छेदों का पढ़ना और उनका भाव ग्रहण करना सिखाया जाय।

९—अध्यापक इस स्तर पर लगभग दो-तीन पृष्ठों की पठन-सामग्री को बालकों के समक्ष पढ़कर सुनायें और उनमें भाव-ग्रहण की क्षमता उत्पन्न करें।

लिखना

१. **अनुलेख**—पहले श्यामपट्ट से और उसके बाद पाठ्यपुस्तक से लिखाया जाय।

२. **श्रुतलेख**—कक्षा के बच्चों के तथा परिचित वस्तुओं के नाम आदि लिखाये जायं।

३. **सुलेख**—सुलेख के निम्नलिखित तत्त्वों पर विशेष ध्यान दिया जाय।

(क) पृष्ठ की बायीं ओर ऊपर तथा नीचे उचित हाशिया हो।

(ख) अक्षर पूरे बनें।

(ग) शब्दों की शिरोरेखाएं अलग-अलग हों।

(घ) पूर्ण विराम चिह्न का प्रयोग हो।

टिप्पणी :—

१—तख़ती पर कलम से अथवा कापी पर पेंसिल से लिखवाया जाय।

२—अनुलेखन के समय शब्द समूहों को पढ़ते हुए लिखने की शिक्षा दी जाय। अक्षर-अक्षर करके पढ़ते हुए नहीं लिखना चाहिए।

३—सुलेख के सम्बन्ध में शिक्षक सीधी लिखायी लिखायें। शिक्षक यह भी देख लें कि छोटे-छोटे लिपि चिह्न जैसे मात्राएँ, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, हलन्त आदि यथास्थान लगाये गये हों।

कक्षा १ में बताये गये कार्य का विस्तार किया जाय। अक्षरों द्वारा शब्द-रचना, शब्दों द्वारा वाक्य रचना, वाक्यों द्वारा कहानी रचना आदि विविध अभ्यास कराये जा सकते हैं।

लेखन अभ्यास में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाय :—

१. अनुलेख, सुलेख तथा श्रुतलेख के अभ्यास पर विशेष ध्यान दिया जाय।

२. अनुलेख के लिए अध्यापक श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों से अपनी उत्तर पुस्तिका या तखती पर उसी प्रकार लिखने को कहें।

३. अध्यापक व्यक्तिगत रूप से भी छात्रों की तख्ती अथवा उत्तर पुस्तिकाओं पर कोई वाक्य लिखकर अनुलेख का अभ्यास करायें।

४. श्रुतलेख की सामग्री बच्चों के स्तर की ही होनी चाहिए।

५. श्रुतलेख के समय अध्यापक एक निश्चित गति, उपयुक्त आवाज तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलें।

६. बोलते समय सामान्यतया शब्द अथवा वाक्य को दुहराया न जाय।

७. पूरा अंश बोलने और लिखाने के बाद पुनः एक बार पढ़ दिया जाय।

८. संशोधन के समय केवल वर्तनी पर ही नहीं, शब्दों में प्रत्येक वर्ण के आकार-प्रकार पर भी ध्यान दिया जाय।

९. अनुपयुक्त ढंग से लिखे गये वर्णों पर ध्यान रखकर शुद्ध अभ्यास कराया जाय।

१०. लिखते समय बच्चों की कलम, कलम पकड़ने के ढंग तथा उनके आसन पर भी ध्यान दिया जाय।

११. बच्चों में सुलेख के प्रति स्पर्धा की भावना जागृत की जाय।

१२. कक्षा २ में कलम का कत ५ मि० मी होना चाहिए तथा पंक्ति के बीच की दूरी २.५ से० मी० हो।

कक्षा ३

पाठ्यक्रम (१)

मौखिक भाव प्रकाशन—

(क) **वार्तालाप एवं कथोपकथन—**इसके विषय विद्यालय एवं समाज के विविध क्षेत्रों से लिए जायं। कक्षा १ और २ की अपेक्षा कक्षा ३ में विषयों का स्तर ऊँचा रहेगा। उदाहरणतः, डाकघर, पंसारी की दूकान, रेल का इंजन, खेत की मिट्टी, निवाड़ की बुनाई, दीपावली, ईद, मनुष्य की वेष-भूषा, रहन-सहन आदि विषय चुने जाने चाहिए।

(ख) **गद्य खण्डों और कविताओं को कंठाग्र करके सुनाना**—कम से कम पाँच गद्य खण्ड और दस कविताएं प्रत्येक बालक कंठस्थ करें।

(ग) **कहानी-कथन**—सुनी हुई अथवा पुस्तक में पढ़ी हुई कहानी सुनाना। दिये हुए संकेतों के आधार पर कहानी बनाना और सुनाना।

(ऐतिहासिक, पौराणिक तथा उपदेशात्मक कहानियां एवं प्रसिद्ध विदेशी कहानियां।)

(घ) **चित्रों की सहायता से मौखिक कार्य**—१-चित्रों का वर्णन २-चित्रों से कहानी कथन।

ध्यान देने योग्य बातें—

१. अध्यापक बालकों से उनके परिवार के सदस्यों का नाम पूछकर उनके कार्यों पर वार्तालाप करायें। २. समाज के उत्थान के विषय में बातचीत करायें। ३. परिवार के वर्तमान एवं पुराने व्यवसाय पर वार्तालाप करायें। ४. वार्तालाप का स्तर कक्षा २ से ऊँचा हो।

उदाहरणार्थ—

शंकर—मित्र ! आज मेरे दादा को वीर-चक्र प्रदान किया गया।

विनोद—उनको वीरचक्र किसने दिया ?

शंकर—राष्ट्रपति ने प्रदान किया।

विनोद—उन्हें वीरचक्र क्यों प्राप्त हुआ ?

शंकर—मेरे दादाजी भारत-चीन युद्ध में बड़ी वीरता के साथ लड़े और उन्होंने शत्रुओं को खदेड़ दिया।

विनोद—हम लोगों को भी इसी तरह देश की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

इसी प्रकार किसान का धन, पहला इंजन, कश्मीर आदि पर बालकों से वार्तालाप कराया जाय। सुनी हुई या पढ़ायी हुई कहानियों को बाल-सभा में स्वयं सुनायें और सुनें। चित्रों की सहायता से प्रश्नों के आधार पर कहानी कहलवायी जाय। नाटकीयकरण एवं अभिनय का उपयोग किया जाय। छात्रों को पाठ्यपुस्तक से कम

से कम पाँच गद्य खण्ड याद करा दिये जायं। पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों या महापुरुषों के लेखों से सुन्दर उपयोगी उद्धरण भी याद करा दिये जायं। इस कक्षा में कम से कम १० कविताएं बालकों को कंठस्थ करा दी जायं और उनका सुपाठ कराया जाय। उनमें से कुछ तो उनकी पाठ्यपुस्तक से हों और कुछ अन्य पुस्तकों से हों। कविताओं पर दो-चार प्रश्न पूछकर उनका भाव समझा दिया जाय। पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त निम्नलिखित कविताएं सुपाठ के लिए बालकों को याद करायी जा सकती हैं—

१. हम सब के थे प्यारे बापू।
हम सब के थे न्यारे बापू॥

जगमग जगमग तारे बापू, भारत के उजियारे बापू।
पर ताकत के पुतले बापू, कभी किसी से डरे न बापू॥
जो कहते थे करते बापू, सदा सत्य अपनाते बापू।
सब को गले लगाते बापू, "सब हैं एक" सिखाते बापू॥
अच्छी राह दिखाते बापू, चरखा खादी लाये बापू।
आजादी भी लाये बापू, बनकर सदा सहारे बापू॥

हम सब के थे प्यारे बापू।
हम सब के थे न्यारे बापू॥

२. समय का है महत्व महान।
काम कभी मत कल पर छोड़ो
कभी काम से मुख मत मोड़ो।
अच्छे कामों को करना है,
आगे बढ़ने का निशान।
समय का है महत्व महान।

बूँद - बूँद सागर बनता है
निशि-दिन नद उसको भरता है।
तब जाकर उसकी छाती पर
चलता है जलयान।
समय का है महत्व महान।

३. चाहे छाया हो अँधियारा,
बरसे जल की मूसल धारा।
कहीं न कोई मिले सहारा,
जीवन रक्षा में लड़ते जाओ।
उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ।

चाहे कितनी आफत आये,
लाखों ही बाधाएँ आयें।
सिर पर दुख के घन घिर जायें,
निडर अडिग पग रखते जाओ।
उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ।

प्राण हथेली पर ले अपने,
जो स्वदेश हित जाते मरने।
अपनी माँ का सब दुख हरने,
उनकी पूजा करते जाओ।
उन्नति पथ पर बढ़ते जाओ॥

४. खिली आज कलियां मतवाली,
उनमें तुमने भर दी लाली,
सुख से देख रहा है माली,
गा रहा गीत प्यारा-प्यारा—
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।

खिले पष्प, पौधे, तरु सारे,
मिले आज वे जो थे न्यारे,
सचमुच तुम हो कितने प्यारे,
धरती पर अधिकार तुम्हारा।
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।

सभी तुम्हारा यश हैं गाते,
पत्र-पुष्प-तरु शीश झुकाते,
जड़ - चेतन सब मोद मनाते,
स्वागत स्वागत है यह न्यारा।
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।

५. जगमग जगमग दीप जल रहे, चमक उठी है रजनी काली ।
नभ ने भी तारे छिटकाकर, खूब मनायी है दोवाली ॥
लिपे पुते सारे घर मन्दिर, साफ और सुथरे कितने हैं ।
सभी हृदय में आनन्दित हैं, बालक वृद्ध युवा जितने हैं ॥
लाई खीर बताशा पाकर, बालक खुश होकर गाते हैं ।
जहाँ तहाँ घर भर मे दीपक, दौड़ दौड़कर रख आते हैं ॥
ग्वालों की वह देखो टोली, नाच-नाच गाती दीवाली ।
वड़े-बड़े लोगों के घर पर, राग-रंग की है तैयारी ॥
घर-घर दीपों की मालाएँ, देखो, लगती कितनी सुन्दर ।
मानों हीरे माणिक मोती, जड़े हुए हैं सब भवनों पर ॥

पढ़ना

(क) परिचित एवं अनुभूत विषयों की सामग्री द्वारा पढ़ने का अभ्यास । लम्बे अनुच्छेदों का पढ़ना । अर्थ अन्वितियों के अनुसार शब्द-समूहों के पढ़ने का अभ्यास ।

(ख) सस्वर पठन की प्रधानता—अपने स्थान से तथा कक्षा के सामने खड़े होकर सस्वर पढ़ना, उच्चारण, मौन-पठन का प्रारम्भ ।

(ग) पठित सामग्री एवं तत्सम्बन्धी चित्रों पर प्रश्नोत्तर हो । पाठ का सारांश और पढ़ी हुई कहानी का भाव पूछा जाय ।

(घ) पठन-सामग्री में पूर्ण पठित-ध्वनियों का अभ्यास एवं निम्नांकित ध्वनियों का समावेश—क्त, क्म, ग्ध, ग्न, ग्र । घ्न, घ्र, ज्ज, ट्र, ड्र, ण्य, त्क, त्य, त्र, त्व, त्स । ध्य, ध्व । द्ग, द्भ, द्र । ध्य, ध्व, न्य । प्व, प्ल । भ्य, प्र, म्न, म्ल । र्ध, र्ण, र्ब, र्व, त्प, त्म । श्म, श्ल, श्व, ष्ठ, स्थ्य, स्फ, स्त, स्व ।

ध्यातव्य बातें—

१. बालकों को सब प्रकार के संयुक्ताक्षरों को पढ़ने का अभ्यास करा दिया जाय । २. अध्यापक स्वयं, अर्थान्विति, वाणी के चढ़ाव उतार, विराम आदि का ध्यान रखते हुए सुपाठ करें । ३. इस स्तर पर साधारणतया बालकों को गद्य के दो पृष्ठ पढ़ने का अभ्यास करा देना चाहिए ।

४. सस्वर पाठ को प्रधानता दी जानी चाहिए। ५. गद्य के मौन पाठ का अभ्यास भी प्रारम्भ कर देना चाहिए।

मौन पाठ के समय :—

१. अध्यापकों का देखना चाहिए कि बालक आवाज न करें। २. पंक्तियों पर उँगली न रखें। ३. पुस्तक आँखों से लगभग एक फुट की दूरी पर रखे। ४. देखा जाय कि बालक मौन पाठ करते हुए स्वयं भाव ग्रहण कर लें। ५. मौन पाठ के पश्चात् बोध प्रश्न भी किये जायं।

३. लिखना—

(क) अनुलेख—पुस्तक से।

(ख) श्रुतलेख—पुस्तक से पढ़े हुए अंश का।

(ग) सुलेख—कक्षा २ की भाँति।

(घ) रचना—वाक्य रचना एवं शब्द रचना पर सरल अभ्यास।

ध्यातव्य बातें—

अनुलेख—अध्यापक पुस्तक के दो-तीन वाक्य श्यामपट्ट या बालकों की अभ्यास पुस्तिका पर सुन्दर अक्षरों में लिख दें। उनको देखकर बालक सुन्दर अक्षरों में लिखें।

श्रुतलेख—पुस्तक के पढ़े हुए पाठ से बोला जाय। धीरे-धीरे तथा स्पष्ट बोला जाय। बालकों को बिना बोले चुपचाप लिखना चाहिए। शब्द समूह केवल एक बार बोला जाय। पूरा अवतरण समाप्त हो जाने के बाद एक बार पुनः सुना दिया जाय। श्रुतलेख सामने से बोला जाय। बालकों के बैठने का ढंग ठीक हो तथा स्याही का पात्र उनके दायीं ओर हो। संशोधन निम्नलिखित प्रकार से कराया जा सकता है—

१—स्वयं अध्यापक द्वारा २—बालकों के द्वारा ही अभ्यास पुस्तिकाएं बदलकर ३—पुस्तक को देखकर स्वयं बालकों के द्वारा। शुद्ध किये हुए प्रत्येक शब्द को बालकों से कम से कम पाँच बार अवश्य लिखवाया जाय।

सुलेख—सुलेख लिखाते समय अध्यापकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। (१) बालकों के बैठने का ढंग (२) कलम दायें हाथ के अँगूठे तथा तर्जनी और मध्यमा उँगली की सहायता से पकड़ें (३) अक्षरों और मात्राओं की बनावट सुन्दर एवं सुडौल हो

(४) अक्षर खड़े हों और उनपर शीर्ष पंक्ति अवश्य लगायी जाय (५) बीच के स्थान समान हों (६) कक्षा ३ में कलम का कत २ मि० मी० तथा पंक्ति की चौड़ाई १ से० मी० हो। शेष नियम कक्षा २ के समान होंगे। (७) विराम-चिह्नों का यथोचित प्रयोग हो। (८) उचित हाशिया छोड़ा जाय।

रचना—शब्द रचना, वाक्य रचना, कहानी-रचना आदि का अभ्यास कराया जाय। कक्षा दो की विधियों का प्रयोग करते हुए उच्चस्तर की रचना करायी जाय।

कक्षा ४

पाठ्यक्रम (१) मौखिक भाव प्रकाशन :

(क) वार्तालाप एवं कथोपकथन—विषय कक्षा ३ की तरह रहें परन्तु उनका स्तर यथोचित ऊँचा होता चले। धीरे-धीरे निम्नांकित विषयों का भी समावेश हो—पंचायत, सहकारिता, पशुओं की रक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, मेला, खेलकूद आदि।

(ख) अभिनय—उपर्युक्त विषयों से सम्बन्धित अभिनय।

(ग) गद्य खण्डों और कविताओं को कंठाग्र करके सुनाना—इस कक्षा में कम से कम ५ गद्य खण्ड और १० कविताओं को कंठस्थ करना और उनका सुपाठ करना।

(घ) कहानो कथन और संक्षिप्त भाषण—पुस्तक में पढ़ो हुई अथवा शिक्षक से सुनी हुई कहानियां सुनाना। संकेतों और चित्रों के आधार पर कहानी बनाकर सुनाना। अधूरी कहानी का पूरा करना—ऐतिहासिक, पौराणिक तथा नोति संबंधो कहानियों के अतिरिक्त आधुनिक छोटो कहानियों का भी समावेश।

ध्यातव्य बातें—

वार्तालाप एवं कथोपकथन कक्षा ३ की तरह ही बालकों से कराये जायं। कक्षा के अनुसार ही स्तर ऊँचा होता चले। उनसे बागवानी कराते समय मिलकर कांर्य करने की उपयोगिता पर वार्तालाप कराया जाय। पाठशाला की सफाई से लाभ, देखे हुए मेलों में खेल-तमाशों आदि के वर्णन उनसे कराये जायं। इन्हीं विषयों पर बालकों से अभिनय भी कराया जाय।

अभिनय करते समय निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान रखा जाय—

१—अभिनय के लिए छात्रों (बालकों) का चुनाव उनकी रुचि के अनुसार किया जाय।

२—अभिनय संबंधी बातों से बालकों को परिचित करा दिया जाय।

३—बालक संवाद को स्वयं प्रश्नोत्तर द्वारा दोहरायें।

४—बालक कक्षा के पात्रों को विशेषता एवं कहानी की घटनाओं को भली भाँति समझ लें। अभिनय के वाचिक, कायिक, सात्त्विक आदि कई अंग हैं।

५—कक्षा अभिनय में वाचिक अभिनय की प्रधानता होती है। यह मुख्यत: कथोपकथन पर आधारित होता है।

६—कथोपकथन की प्रभावोत्पादकता पर विशेष बल होना चाहिए।

७—अभिनय में किंचित अंग संचालन और हाव-भाव प्रदर्शन भी करवाया जाय।

कहानी के सम्बन्ध में ध्यान दिया जाय कि—

१—पढ़ी हुई कहानियों के अतिरिक्त बाहर की कुछ मनोरंजक कहानियां अध्यापक सुनायें।

२—सुनायी हुई कहानी को बालकों से दुहरवाया जाय।

३—छात्रों को कहानी-लेखन के लिए भी प्रेरित किया जाय।

४—कहानी में आनेवाले विभिन्न प्रमुख शब्दों को देकर उनके आधार पर कहानी लिखवायी जाय।

५—कुछ संकेत अथवा कहानो का कुछ अंश देकर पूरी कहानी लिखने को कहा जाय। जैसे—

(क) कहानी का पूर्व अंश बताकर—एक बुढ़िया के पास सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गी ....।

(ख) मध्यअंश बताकर=कुत्ते के मुँह में रोटी का टुकड़ा, नाला पार करते समय उसने अपनी परछाईं को दूसरा कुत्ता समझकर ....।

(ग) अन्त बताकर= ... ... लोमड़ो अंगूर के गुच्छे तक न पहुँच पायी तो कहने लगी 'छी! छी! अंगूर खट्टे हैं।'

बालकों को इस कक्षा में पाठ्य पुस्तक से या अन्य स्रोतों से कम से कम ५ गद्य खण्ड और १० कविताएं अवश्य कंठस्थ करा दी जायं।

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त निम्नलिखित कविताएं भी याद कराया जा सकती हैं—

१. वीर भूमि के सपूत, तुम कभी रुको नहीं।
वीर भूमि के सपूत, तुम कभी झुको नहीं॥
फूल पर चले चलो, शूल पर चले चलो।
राग पर बढ़े चलो, आग पर चढ़े चलो॥
लक्ष्य सामने रहे, वक्ष सामने रहे।
तुम कभी रुको नहीं, तुम कभी झुको नहीं॥
वीर भूमि के सपूत, तुम कभी झुको नहीं॥

(द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी)

२. यह देखो, यह पूनी मेरी, कैसी सुन्दर पूनी मेरी।
कितना मनहर इसका स्वरूप, है रजत-शलाका-सी अनूप।
बाहर की तड़क-भड़क वाली, पर भीतर हृदय सदा खाली।
बतलाती है हमको, ऊपर से जो रहते हैं सज-धजकर।
उनकी भी दशा यही होती, बस बाहर तड़क-भड़क होती।
भीतर खोखला हृदय खाली, सजधज ही केवल मतवाली।

(कातो और गाओ से—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी)

३. आओ हिल-मिल चुनें कपास, कैसी सुन्दर खिली कपास।
लगता—यह हमसे हँसती है, हँस-हँसकर बातें करती है।
फूली नहीं समाती है यह, चटक-चटक खिल जाती है यह।
धीमा-सा बस झोंका पाकर, खिलने लगती है टहनी पर।
हँस-हँस, हँसकर झूल रही है, खुश हो-होकर फूल रही है।
कितनी अच्छी लगती है यह, मन मेरा ललचाती है यह।

(कातो और गाओ से)

४. जहाँ जन्म देता हमें है विधाता, उसी ठौर में चित्त है मोद पाता।
जहाँ हैं हमारे पिता, बन्धु, माता, उसी भूमि से है हमें सत्य नाता।
जिसे जन्म की भूमि भाती नहीं है, जिसे देश की याद आती नहीं है।
कृतघ्नी यहाँ कौन ऐसा मिलेगा, उसे देख जी क्या किसीका खिलेगा।
धनी हो बड़ा या बड़ा नामधारी, नहीं है जिसे जन्म की भूमि प्यारी।
वृथा नीच ने मान सम्पत्ति पायी, बुरे के बढ़े से हुई क्या भलाई।

(मैथिलीशरण गुप्त)

५. दीनों दुखियों की कराह, दलितों की करुण पुकारों को।
सुनकर भारत माता की, हथकड़ियों की झंकारों को।
छोड़ राजसी सुख जिसने, कंटकमय पथ को अपनाया।
रहा साधना-निरत, सदा, संकट में भी जो मुस्काया,
बापू का अनुयायी जो, उनके पद-चिह्नों पर चलता,
जग को देने को प्रकाश, जो दीपक-सा जलता रहता।
खेल न पायी दुख में भी, तम की छाया जिसके मुँह पर।
और सिंहासन भी जिसको, है लुभा नहीं पाया छूकर।
दीनों, दुखियों, दलितों, पतितों का जो परम सहारा है,
वह राजेन्द्र हमारा प्रिय, भारत का भाग्य सितारा है।

६. आज वसन्त का पहला दिन,
कुछ-कुछ सुगन्ध को लेकर कण,
अब देखो, बहने लगा पवन।
कुछ कुछ निकले हैं नये सुमन।
यह है वसन्त का पहला दिन।

है कभी-कभी गाती कोयल,
फिर चुप हो छुप जाती कोयल।
यह है वसन्त का पहला दिन।
किरणों में कुछ-कुछ है लाली,
दूबों में कुछ-कुछ हरियाली,

यह है वसन्त का पहला दिन।
कुछ दिन अब लगते हैं सुन्दर,
कुछ दिशा दीखती है मनहर,
वह कौन गया है जादूगर
यह है वसन्त का पहला दिन।

(२) पढ़ना—कक्षा ३ से ऊँचे स्तर की सामग्री द्वारा पढ़ने का अभ्यास।

(क) सस्वर पठन—शुद्ध उच्चारण एवं स्वयं उचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ना।

(ख) मौन पठन—मौन पठन की शिक्षा २. मौन पठन द्वारा पठन-सामग्री का बोध ३. मौन पठन की गतिवृद्धि।

(ग) पठित सामग्री पर अभ्यास—१. प्रश्नों के उत्तर देना। पाठ का सारांश देना। रिक्त स्थानों की पूर्ति करना। २. शब्दों तथा वाक्यांशों का अर्थ एवं प्रयोग, शब्द रचना, पर्याय तथा विलोम।

(घ) सरल कविताओं का रसास्वादन।

(३) व्याकरण—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण की पहचान और उनका प्रयोग।

इस सम्बन्ध में ध्यान दिया जाय :—

१. पढ़ते समय अध्यापक बालकों के उच्चारण पर ध्यान दें और अशुद्ध उच्चारण करने पर शुद्ध उच्चारण करना बतायें। २. श, ष, स, ब, व, तथा उ, इ के उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाय। ३. बच्चों को कुछ सरल कविताएं रसास्वादन के लिए दी जायं। ४. वाचन के समय आरोहावरोह पर विशेष ध्यान दिया जाय। ५. बच्चों से पढ़ाने के पूर्व अध्यापक स्वयं भी विधिवत आदर्श पाठ दें। ६. मौन पठन करने के बाद उस अवतरण पर बालकों से प्रश्न किये जायं और उनकी पठन योग्यता का मूल्यांकन भी किया जाय। ७. गद्य पाठां में पढ़े हुए अंश से रिक्त-पूर्ति करवायी जाय। एक वाक्य या खण्ड में कई रिक्तियाँ देकर पूर्ति करवायी जा सकती है। ८. पढ़ाते समय आये हुए शब्दों के पर्याय और विलोम शब्द साथ ही बताये जायं। ९. शब्दों का अर्थ लिखकर साधारण वाक्यों में प्रयोग भी कराया जाय। १०. ध्यान दिया जाय कि इस कक्षा में छात्रों को ४ मिनट में दो पृष्ठ तक पढ़ने का अभ्यास हो जाय।

व्याकरण के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि के कई उदाहरण देने के बाद जब बालकों को उनके भाव का आभास हो जाय तभी उनकी परिभाषा बतायी जाय।

(४) लिखना—

(क) अनुलेख, श्रुतलेख, सुलेख का अभ्यास कराया जाय।

(ख) रचना।

१—वाक्य रचना और शब्द रचना पर सरल अभ्यास ।

२—चित्र अथवा शब्द संकेतों के आधार पर परिचित सामग्री का वर्णन तथा कहानी लिखना ।

३—आवेदन पत्र तथा सामान्य पारिवारिक पत्र लिखना ।

४—कक्षा ३ में कलम का कत १.५ मि० मी० तथा पंक्ति के बीच की दूरी ७.५ से० मी० हो। शेष नियम कक्षा १ के समान होंगे। अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख के लिए कक्षा ३ की भाँति ही उच्चस्तर को ध्यान में रखते हुए लिखने का अभ्यास कराया जाय। पढ़ी हुई पुस्तक के अंशों या कहानियों को लिखने की क्षमता आ जानी चाहिए। बालक विचारों को लेखनी द्वारा प्रकट कर सकें। इस स्तर पर बालक इस योग्य भी हो जायं कि वे अपने पिता, भाई, बहिन आदि सम्बन्धियों को साधारण पत्र भी लिख सकें।

कक्षा ५

पाठचक्रम—(१) मौखिक भाव प्रकाशन :—

(क) वार्तालाप एवं कथोपकथन—विषय कक्षा ४ की तरह रहे परन्तु उनका स्तर क्रमशः ऊँचा होता चले । धीरे-धीरे निम्नांकित प्रकार के विषयों का भी समावेश हो—पंचायत, सहकारिता, दुर्व्यवहार से पशुओं की रक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, मेला, खेल-कूद इत्यादि ।

(ख) अभिनय—उपर्युक्त विषयों से सम्बन्धित अभिनय ।

(ग) गद्य खण्डों और कविताओं को कंठाग्र करके सुनाना—कम से कम पाँच गद्य खण्ड और दस कविताओं को कंठस्थ करना और उनका सुपाठ करना ।

(घ) कहानी कथन और संक्षिप्त भाषण—पुस्तक में पढ़ी हुई अथवा शिक्षक से सुनी हुई कहानियां सुनाना । संकेतों तथा चित्रों के आधार पर कहानी बनाकर सुनाना । अधूरी कहानी को पूरा करना । ऐतिहासिक, पौराणिक तथा नीति सम्बन्धी कहानियों के अतिरिक्त आधुनिक छोटी कहानियों का भी समावेश ।

ध्यातव्य बातें :—

मौखिक भाव प्रकाशन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए—

(क) बालक शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकें।

(ख) मिश्रित एवं संयुक्त वाक्यों का प्रयोग कर सकें।

(ग) लिंग एवं वचन का शुद्ध प्रयोग कर सकें।

(घ) प्रश्नों का शुद्ध उत्तर दे सकें।

विधि : १. अध्यापक बालकों से पाठ्यक्रम में दिये हुए विषयों पर वार्तालाप करायें। जहाँ बालक रुकें वहाँ संकेत भी करें।

२. चित्रों को दिखाकर प्रश्न पूछे जायं और बालकों से उत्तर प्राप्त किये जायं।

३. चित्रों को दिखाकर प्रश्नों के आधार पर सम्पूर्ण कथा कहलवायी जाय।

४. समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के पढ़ने में रुचि उत्पन्न की जाय।

५. सूचना पट्ट पर मोटे-मोटे शब्दों में मुख्य समाचार लिखवाये जायं।

६. राष्ट्रीय पर्वों पर बाल-सभा में तथा अन्य अवसरों पर विविध विषयों पर महापुरुषों के कार्यों, सफाई, पंचायत के कार्यों आदि पर छोटे-छोटे भाषण दिलवाये जायं। अच्छे भाषणकर्ता को पुरस्कृत भी किया जाय।

७. कक्षा या बाल-सभा में या अन्य अवसरों पर अभिनय कराये जायं। कक्षा अभिनय के द्वारा भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की अधिकाधिक (व्यापक स्तर पर) पूर्ति सम्भव है। कक्षाभिनय में केवल वाचिक अभिनय पर बल देना चाहिए। कक्षाभिनय में कक्षा के सभी बालक बारी-बारी से लाभान्वित किये जा सकते हैं। विशेष अवसरों पर पूरे विद्यालय के बच्चों द्वारा भी अभिनय कराये जायं, जिनमे मंच आदि की आवश्यकता पड़ती है। इनसे बालकों के कायिक, वाचिक और सात्विक आदि सभी अंगों का विकास होगा। अभिनय के समय अभिनेताओं को अपने कथोपकथनों में हाव-भाव, अंग संचालन तथा पात्रों से सम्बन्धित मुद्रा संकेतों का भी प्रयोग

करना चाहिए, जिससे कि बालकों के मौखिक भाव-प्रकाशन के सभी उद्देश्यों की पूर्ति हो जाय।

उदाहृणार्थ :—राष्ट्र भारती भाग—१ के 'अशोक का शस्त्र-त्याग' से छोटा अंश नीचे दिया जा रहा है। इसका पात्रों के भावों एवं संकेतों के अनुसार बालकों से अभिनय करवाया जाय, जिससे वैसा ही दृश्य उपस्थित हो जाय।

द्वारपाल : (सिर झुकाकर) राजन ! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (प्रवेश करके) महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचांर लाया है कि कलिंग के महाराजा लड़ाई में मारे गये हैं।

अशाक : (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गये हैं ? तो मगध की विजय हुई है। कलिंग जीत लिया गया है।

(संवाददाता चुप रहता है)

अशोक : बोलते क्यों नहीं हो तुम ? चुप क्यों हो ?

संवाददाता : (धीरे से) बोलूं क्या महाराज ! कलिंग दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं। फिर किस मुंह से बोलूं कि कलिंग जीत लिया गया है।

अशोक : (उत्तेजित होकर) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं ?

संवाददाता : हाँ महाराज ! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (उत्तेजित होकर खड़े होते हुए) बंद हैं तो खुल जायंगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग दुर्ग के फाटक खुल जायंगे या मगध की सेना ही वापस चली जायगी। (हाथ से जाने का संकेत करते हैं।)

८. कक्षा ४ की तरह कहानियां कहलवायी जायं लेकिन वे छात्रों पर प्रभाव डालनेवाली हों और उनके कहने का ढंग अधिक प्रभावशाली हो। ये कहानियां निम्नांकित प्रकार की हो सकती हैं।

पौराणिक कहानिया :—इनके अन्तर्गत ध्रुव, प्रह्लाद, दधीचि आदि की कहानियां आती हैं। इनसे ध्रुव की दृढ़ता, दधाचि का आत्मत्याग जैसी भावनाओं से बालकों को प्रभावित किया जा सकता है।

परियों की कहानियाँ :—इस तरह की कहानियाँ बालक सुनना और कहना अधिक पसन्द करते हैं। इनमें कल्पना, आश्चर्य, कुतूहल अधिक होता है। इसलिए यह ध्यान रखा जाय कि बालकों में भय और अंध-विश्वास न उत्पन्न होने पाये।

स्थानीय कथाएं :—इनमें स्थानविशेष अयोध्या, मथुरा, नैमिष-मिश्रित, ऋषिकेश, काबा, रामेश्वरम, सारनाथ आदि से सम्बन्धित कहानियां आती हैं। इन्हें सुनाकर बच्चों से कहलवाया जाय।

महापुरुषों एवं नारी-रत्नों की कहानियां :—इनमें महात्मा गांधी, नेहरूजी, सुभाषचन्द्र बोस, हमीद, गौहर बानू, चाँदबीबी, सरोजिनी नायडू आदि की कहानियां आतो हैं। इन्हें बच्चों में सुनाया जाय और उनसे दोहरवाया जाय।

लोककथाएं :—आल्हा-ऊदल, पन्ना-हमीरहठ, ढोला-मारू आदि की कथाएं सुनी-सुनाई जायं।

पशुओं और पक्षियों की कथाएं-बिल्लो की स्वार्थपरता, गधे की मूर्खता, बगुला और मछली, कुत्ते और घोड़े की स्वामिभक्ति, केकड़ा और मछली, लोमड़ी और अंगूर, सियार की चालाकी, कोयल की अज्ञानता, कौए की चतुरता पर कहानियां बालकों को सुनायो जायं और उनसे स्वयं कहने को कहा जाय।

इसके अतिरिक्त बालकों से निम्नांकित प्रकार से कहानी-रचना भी करायी जाय :—

१—संक्षिप्त रूपरेखा देकर—जैसे—प्यासा कौआ–घड़े में कुछ पानी–कौए का उड़ना–मुँह में कंकड़ के टुकड़े। पानी पीकर कौए का प्रसन्नता से काँव काँव करना।

२—शब्दों के सहारे कहानी रचना—युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, द्रौपदी, अभिमन्यु, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, भीष्म पितामह, कर्ण, दुःशासन, चीरहरण, कृष्ण; कुरुक्षेत्र, कौरव-पांडव, युद्ध आदि शब्दों के आधार पर महाभारत की पूरी कहानी लिखवायी जा सकती है।

३—संकेतों के द्वारा कहानी रचना—भूखा सारस, होशियार लोमड़ी, खीर से भरी थाली का संकेत देकर बालकों से लोमड़ी और सारस की पूरी कहानी कहलवायी और लिखवायी जा सकती है। इसके अतिरिक्त कक्षा ४ में बतायी गयी विधियों से बालकों को कहानी कहना और रचना करना सिखलाया जाय।

९. इस कक्षा में ५ गद्य खण्ड तथा १० कविताएं पाठ्य-पुस्तक से याद करायी जायं और कविताओं का सुपाठ कराया जाय। पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त निम्नांकित कविताएं भी बालकों को याद करायी जा सकती हैं :—

१— तिरंगा चक्रमय झंडा हमें है प्राण से प्यारा,
सदा उड़ता रहे ऊँचा सबक सीखे जगत सारा।
गगन में सूर्य सा चमके, जगत में दीप जलवाये,
सदा उड़ता रहे ऊँचा सदा सुख शांति बरसाये।
शहीदों का हृदय इसमें जवाहर से अजय इसमें,
अमन का पोत रंग इसमें, मनुष्यों की विजय इसमें।
जवानी झाँकती इसमें, कहानी झाँकती इसमें,
रवानी झाँकती इसमें, निशानी झाँकती इसमें।
तुम्हारी आन का तारा, हमारी शान का नारा,
तिरंगा चक्रमय झंडा, हमें है प्राण से प्यारा।

२— प्राची में जो तेज पुंज की मणि सा चमका प्यारा,
वीर जवाहर वह भारत माता का लाल दुलारा।
अंन्यायी के अंधकार को जिसने दूर भगाया,
अमर पिता बापू के पद-चिह्नों का लिये सहारा।
वह प्रसन्न मुख, आँधी पानी में ज्यों खिला कमल है,
वह पावन जीवन, भू पर ज्यों पावन गंगा जल है।

सहज सरलता वह जिस पर जग-वैभव बलि-बलि जाता,
वह अदम्य विश्वास, हिमालय जैसा अटल अचल है।
राज महल का राज कुँवर बन्दी-गृह का अधिवासी,
राज मुकुट धारण कर भी जो वीतराग संन्यासी।
जो सुख-दुख में एक भाव राजर्षि जनक अनुगामी,
एक भाँति काँटों फूलों पर चलने का अभ्यासी।
तरुण तपस्वी लपटों से शृंगार किया जीवन का,
वृद्ध युवक बन गया हृदय-सम्राट आज जन-जन का।
कर्णधार है आज वही भारत-माँ की नौका का,
उसके रहते क्या डर है आँधी-पानी तम-घन का।

३— भारत माता के मन्दिर में घी के दिये जलाओ।
गद-गद कंठ प्राण है शीतल, जन-जन झूम रहा है।
भारत के आँगन में जैसे, नन्दन घूम रहा है।
घर-घर मंगल दीप जले हैं, अनुपम सुख छाया है।
गणतन्त्र देश में आने का, यह पुण्य पर्व आया है।
अमर शहीदों के चरणों में श्रद्धा सुमन चढ़ाओ।
सत्य बने बापू का सपना, राम राज्य फिर आये।
चमक उठे फिर सुख का सूरज, दु:ख का तम हट जाये।
जाग उठे सोयी मानवता, जागे फिर कल्याणी।
अखिल विश्व में गूंज उठे फिर, भारत माँ की वाणी।
यह कामना लेकर मन में मंगल सदा मनाओ।
भारत माता के मन्दिर में घी के दिये जलाओ।
(श्रीमती शकुन्तला खरे)

४— होली आई, होली आई,
नयी उमंगें संग में लायी।
गली-गली में है रंगरेली,
सब ने मिलकर होली खेली।
रंग - बिरंगे कितने न्यारे,
रंग घोलकर बारी-बारी,
मारेंगे भर-भर पिचकारी।
बहुत उड़ेगी आज गुलाल,

फकेंगे सब जिसे उछाल,
रंग मुखों पर लगा रसीले,
बन जायेंगे रंग रंगीले।
नाच-कूदकर रास करेंगे,
भाँति-भाँति के रूप धरेंगे।
रहना सीखें सभी प्रेम से,
भ्रातृ-भाव से कुशल क्षेम से,
बोलें मीठी सबसे बोली,
यही बताती सबको होली।

५— गर्मी के हैं दिवस, बड़ी ही कड़ी धूप में,
उगल रहे रवि, अग्नि चक्र के रूप में।
चिनगारी सो किरण चमकती रेत में,
तह तक सूखी पड़ी, भूमि हर खेत में,
सूखे मुख सब लिये, उदासी छा रही,
सन्नाटे में लपट लूक की आ रही।
राहें सूनी पड़ी कहीं कोई नहीं,
आसमान में चील, बोलती बस कहीं।
बन बराह के झुण्ड हिरन भैंसे बड़े,
लोट रहे हैं विकल कीचड़ों में पड़े।
बेदम होकर बैल काम करते नहीं।
ऐसे व्याकुल हुए, घास चरते नहीं।

(२) **पढ़ना** :—कक्षा ४ से ऊँचे स्तर की सामग्री द्वारा अभ्यास।

(क) सस्वर पठन—शुद्ध उच्चारण तथा उचित आरोह-अवरोह के साथ पढ़ना।

(ख) मौन पठन—१. मौन पठन की शिक्षा २. मौन पठन द्वारा पठन-सामग्री का बोध ३. मौन पठन की गति वृद्धि।

(ग) पठित सामग्री पर अभ्यास। १. प्रश्नों के उत्तर देना, पाठ का सारांश देना, रिक्त स्थानों की पूर्ति करना। २. शब्दों तथा वाक्यांशों का अर्थ एवं प्रयोग, शब्द रचना, पर्याय तथा विलोम।

(घ) सरल कविताओं का रसास्वादन।

गद्य-पठन के उद्देश्य—

१. अनुच्छेद पढ़कर बालक उसका भाव समझ लें।
२. सरल शब्दों का अर्थ संदर्भ द्वारा समझ लें।
३. बालक शुद्ध उच्चारण के साथ विराम आदि को ध्यान में रखते हुए गति के साथ पढ़ सकें।
४. सामान्य रूप से कक्षा ५ में ३ मिनट में दो पृष्ठ पढ़ना आ जाय।

विधि—पाठ्यपुस्तक में दिये गये पाठों के गद्यांशों को निम्नलिखित सोपानों में पढ़ाना चाहिए—

१. प्रस्तावना—पहले पाठ्य विषय की पृष्ठभूमि से बच्चों को अवगत करा दिया जाय, जिससे पढ़ते समय उनका गद्यांश से सम्बन्ध बना रहे।
२. उच्चारण का अभ्यास—पाठ पढ़ते समय कठिन शब्दों के उच्चारण का अभ्यास करा दिया जाय। श, ष, स, व, व, क्ष, ज्ञ तथा इ, उ, ऋ की मात्राओं के उच्चारणों पर विशेष बल दिया जाय क्योंकि इनके उच्चारण में बालकों से त्रुटियां अधिक होती हैं।
३. मौनपाठ—मौन पाठ के समय विशेष सावधानी रखी जाय। बालक पढ़ते समय आवाज न करें और नही पंक्तियों पर उँगली रखें। पढ़ने की गति भी तेज हो।
४. बोधात्मक प्रश्न—पढ़ने के समय कुछ संकेत बिन्दु भी दे देने चाहिए। पढ़ने के बाद उस खण्ड पर कुछ प्रश्न भी किये जायं, जिससे बालकों की भावग्रहण क्षमता का पता चल सके।
५. स्पष्टीकरण—जहाँ पर अनुच्छेदों के भाव को बालक न समझ सकें अध्यापक उनके भाव को सरल शब्दों में स्पष्ट करें। पुनः एक-दो प्रश्न पूछकर स्थिति का पता लगा लें।
६. आदर्श पाठ—अध्यापक बच्चों के सम्मुख स्पष्ट, शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ें। गति, विराम चिह्नों पर ध्यान देते हुए आरोह-अवरोह के साथ पढ़ें।
७. बालकों द्वारा सस्वर पाठ—बालकों के पढ़ते समय उनके उच्चारण, विराम चिह्नों के प्रयोग और भाषानुकूल उतार-चढ़ाव पर ध्यान दिया जाय।

८. पुनरावृत्ति तथा भाषा कार्य—सम्पूर्ण अंश पढ़ लेने और भाव स्पष्ट कर देने के बाद बालकों से उस पर एक-दो प्रश्न पूछे जायं। इसके पश्चात वाक्य प्रयोग, व्याकरण तथा अन्य भाषा सम्बन्धी कार्य कराये जायं।

(ख) पद्य पठन के उद्देश्य—

१. यथावश्यक भाषा का ज्ञान कराना।
२. कविता-सौन्दर्य का ज्ञान कराना।
३. आनन्द की प्राप्ति में सक्षम बनाना।

विधि—पाठ्य-पुस्तक में दी गयी कविताओं को निम्नलिखित सोपानों के अनुसार पढ़ाया जाय—

१. प्रस्तावना—कुछ प्रश्नों या समान कविता के द्वारा प्रस्तुत अंश से सम्बन्ध जोड़ा जाय जिससे बालकों की रुचि प्रस्तुत खण्ड की ओर उत्पन्न हो।
२. स्पष्टीकरण—जहाँ पर कविता का भाव स्पष्ट न हो रहा हो बालकों की सहायता से या यथा आवश्यक स्वयं उसका भाव अध्यापक द्वारा स्पष्ट करना चाहिए।
३. प्रथम सस्वर पाठ—अध्यापक द्वारा स्वर, लय, आरोह-अवरोह के साथ किया जाय।
४. बालकों द्वारा सस्वर पाठ—अध्यापक का अनुकरण करते हुए बालक सस्वर एवं सुपाठ करें।
५. सौन्दर्यानुभूति, भाव कल्पना के लिए विविध प्रश्न किये जायं।
६. सुन्दर पंक्तियों को दोहराते हुए कविता को कंठाग्र कराया जाय।
७. अध्यापक द्वारा पुनः आदर्श पाठ किया जाय और फिर बालकों द्वारा सस्वर सुपाठ कराया जाय। अन्त में अध्यापक एक बार पुनः आदर्श पाठ करें।

व्याकरण : व्याकरण की शिक्षा गद्य पाठ के साथ ही दी जाय। उसमें प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण आदि के प्रयोग बताकर उनकी परिभाषा से भी छात्रों को अवगत कराया जाय। पढ़ाते समय ही शब्दों के पर्याय एवं विलोम बालकों से पूछे जायं। उनके न बता सकने पर अध्यापक स्वयं बतायें। बालकों को पहले शब्द रचना और

वाक्य रचना का ज्ञान कराया जाय। उसके बाद व्याकरण के नियम बताये जायं और अनेक उदाहरण देकर बालकों से ही नियम निकलवाये जायं।

(३) लिखना—

१. अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख लिखाना।
२. रचना—वाक्य रचना और शब्द रचना पर सरल अभ्यास।
३. आवेदनपत्र तथा सामान्य पत्र लिखना।

अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख कक्षा ४ से उच्च स्तर का लिखाया जाय। लिखने में नरकट की कलम का ही प्रयोग कराया जाय। कक्षा ५ में कलम का कत १·५ मि० मी० तथा पंक्ति की चौड़ाई ·७५ से० मी० हो। शेष नियम कक्षा ४ की भाँति होंगे। अक्षर बड़े और सुडौल हों। अक्षर सदैव बायें से बनाये जायं। अक्षर समान हों। शिरोरेखा लगायी जाय। नीचे की पंक्ति भी बराबर रहे। हाशिया अवश्य छोड़ी जाय। छोटे-छोटे सरल वाक्य विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए बालक लिख सकें, जो सुपाठ्य हों। इसके बाद उनसे अवकाश—प्रार्थनापत्र, माता-पिता, भाई-बहनों तथा अन्य सम्बन्धियों को पत्र लिखवाये जायं। ऐसी क्षमता अध्यापक बालकों में उत्पन्न करें कि इस स्तर पर छात्र पाठ्यपुस्तक के अंश तथा अपठित अंश को प्रवाह एवं शुद्धता के साथ सुन्दर ढंग से पढ़ सकें और साधारण पारिवारिक पत्र आदि लिखने की योग्यता प्राप्त कर लें। बालकों की लिखावट सुपाठ्य, सुन्दर एवं शुद्ध हो, इस दिशा में अध्यापकों को प्रयास करना चाहिए।

हिन्दी शिक्षण में उपर्युक्त विधियों का प्रयोग करके छात्रों के भाषा-ज्ञान को अधिक सम्पुष्ट किया जा सकता है। किसी भी विषय के शिक्षण में अध्यापक की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उसीके द्वारा शिक्षण की विभिन्न विधियों का सफलतापूर्वक उपयोग हो सकता है क्योंकि शिक्षण विधियों का संचालक वही है। इस दृष्टि से भाषा शिक्षक में कतिपय विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है।

भाषा शिक्षक के गुण :

१. छात्रों के प्रति सहानुभूति एवं सहृदयता की भावना प्रत्येक अध्यापक में होनी चाहिए। भाषा अध्यापक में तो इसकी नितान्त आवश्यकता है।

२. भाषाध्यापक में उच्चारण की शुद्धता के साथ कुशल अभिव्यक्ति की क्षमता होनी चाहिए।

३. भाषाध्यापक को शब्दों का समुचित रूप में ज्ञान होना चाहिए ताकि उनके विलोम, पर्याय एवं अनेकार्थ का बोध छात्रों को सही ढंग से करा सके।

४. अध्यापक की भाषा सरल एवं सुस्पष्ट होनी चाहिए।

५. बाल मनोविज्ञान की जानकारी होनी चाहिए जिससे छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों के निराकरण में सहायता मिल सके।

६. विषय ज्ञान सभी अध्यापकों के लिए आवश्यक है किन्तु भाषा अध्यापक को विषय के साथ-साथ भाषा के विभिन्न अंगों, उच्चारण, वर्तनी, शब्द एवं व्याकरण आदि की विशेष जानकारी होनी चाहिए।

७. श्यामपट्ट एवं अन्य शिक्षण सहायक सामग्रियों के समुचित प्रयोग की जानकारी होनी चाहिए।

८. अध्यापक में आत्मविश्वास एवं अनुशासन-प्रियता होनी चाहिए।

९. हिन्दी अध्यापक में सृजनात्मक शक्ति होनी चाहिए, जिससे वह बालकों को भी उस दिशा में प्रेरित कर सके।

१०. भाषा अध्यापक का हस्तलेख सुन्दर होना चाहिए, साथ ही भाषा बालकों को सुलेख का उचित अभ्यास करने के लिए चाकू से कलम बनाने की योग्यता भी होनी चाहिए।

११. इसमें 'कथनी और करनी' की एकता होनी चाहिए जिसका अनुकरण छात्र भी कर सकें।

•